SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखण्ड प्रदेश में चित्रकला के विकास का एक अवलोकन आधुनिक परिदृश्य में

संगीता कुमारी सिंह, शोधार्थी, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
संगीता कुमारी सिंह, शोधार्थी, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/03/2022
Revised on : -----
Accepted on : 10/03/2022
Plagiarism : 00% on 04/03/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Friday, March 04, 2022
Statistics: 4 words Plagiarized / 1545 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

>kj[k.M Áns'k esa fp=dyk ds fodkl dk ,d voyksdu vk/kqfud ifjn`'; esa Hkwfedk >kj[k.M Áns'k dh lkaLd`frd fofo/krk ds lkFk&lkFk vusdrk esa ,drk dk n'kZu ;gk¡ dh fp=dyk dh Hkh fof'k"Vrk gSA >kj[k.M esa fp=dyk ds mn~Hko] fodkl] mldh fof'k"Vrk ,oa fofo/k 'kSfy;ksa ds lanHkZ esa ^lk[;^ ds :i esa ^>kj[k.M

ds dyk ifjn`'; Hkkx esa cqyq beke] MkWŒ vkfnR; izlkn flUgk] uhfyek vkSj feYM®sM vkpZj }kjk fyf[kr vkys[kksa dks izLrqr fd;k tkrk gSA buesa >kj[k.M esa ikbZ tkus okyh ,oa izpfyr

शोध सार

झारखण्ड प्रदेश में जनजातीय चित्रकला का उद्भव एवं विकास कब से आरंभ हुआ यह पता लगाना असंभव है, किन्तु यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त हुए शैलाश्रय एवं भित्ति–चित्रों के साक्ष्य के आधार पर इसे पाषाणकाल से जोड़ा जाता है। सम्पूर्ण झारखण्ड प्रदेश में पाए गए चित्रकला के नमूने अपने विशेष प्रकृति प्रेम को उजागर करती है, तथा पूर्णरूप से पर्यापरण संरक्षण को परिभाषित करती है, जिसका वर्तमान समय में काफी महत्व है। इस प्रदेश की प्राचीन चित्रकला शैली जादोपटिया, सोहराय, कोहबर शैली है, जो की प्रायः लुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी है। हमारे देश के अन्य राज्यों की भाँति इस राज्य की चित्रकला शैली को पहचान नहीं मिल पाया है। बिहार प्रान्त से अलग होने के उपरांत अपने अस्तित्व को उजागर करने में यह प्रदेश धीरे–धीरे सफल हो रहा है। विभिन्न संस्थाएँ तथा सरकार द्वारा इसे संरक्षित और सुरक्षित किए जाने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में झारखण्ड प्रदेश की चित्रकला शैली के महत्व को आधुनिक संदर्भ में जोड़ कर देखने की कोशिश की गयी है।

मुख्य शब्द

शैलचित्र, चित्र दीर्घा, शैल फलक, जादोपटिया, वैद्यनाथ शैली, अरिपन चित्र.

भूमिका

झारखण्ड प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता के साथ–साथ अनेकता में एकता का दर्शन यहाँ की चित्रकला की भी विशिष्टता है। झारखण्ड में चित्रकला के उद्भव, विकास, उसकी विशिष्टता एवं विविध शैलियों के संदर्भ में 'साक्ष्य' के रूप में 'झारखण्ड के कला परिदृश्य भाग में बुलु इमाम, डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा, नीलिमा और मिल्ड्रेड आर्चर द्वारा लिखित आलेखों को प्रस्तुत किया

जाता है। इनमें झारखण्ड में पाई जाने वाली एवं प्रचलित विभिन्न चित्र कलाओं – शैल–गुफा चित्र, काष्ट चित्र, भित्ति चित्र, पट्ट चित्र अथवा जादो पटिया, अरिपन चित्र प्रतीक चित्र, गोदना चित्रकला आदि का विस्तृत वर्णन है। अनेक देशी–विदेशी विद्वान और शोधकर्ता इन क्षेत्रों का भ्रमण, अध्ययन एवं अन्वेषण कर यहाँ की गुफाओं में बने शैल चित्रों को विश्व की प्राचीनतम शैल चित्रों के रूप में चिह्नित किया है। यह पूरा क्षेत्र हजारीबाग जिले के उतरी–पूर्वी भाग में दामोदर नदी की घाटी में अवस्थित बड़कागाँव प्रखण्ड की सति पहाड़ी श्रृखंला में अवस्थित है।

झारखण्ड में चित्रकला अथवा लोक चित्रकला की परम्परा गुफा काल के आदि मानव से लेकर इस इक्कीसवीं सदी के वैज्ञानिक मानव अथवा अत्याधुनिक मानव के बीच किसी न किसी रूप में जीवित है। झारखण्ड में पारम्परिक लोक चित्रकला को जीवित रखने और उन्हें आधुनिक सन्दर्भ में विकसित कर प्रस्तुत करने का कार्य काफी समय से यहाँ चित्रकारों द्वारा जाता रहा है। प्रस्तुत आलेख में कतिपय चित्रकारों एवं उनकी कृतियों अथवा चित्रकला के क्षेत्र में उनकी उपलब्धि को प्रकाश में लाने का प्रयास है।

झारखण्ड क्षेत्र में चित्रकला की पहचान एवं विकास

झारखण्ड की इस प्राचीनतम एवं प्रागैतिहासिक काल की धरती पर वनमानुष या आदिमानव के निवास करने के अनेकों मेगालिथिक एवं पुरातात्विक अवशेष विभिन्न क्षेत्रों में मिले हैं। विशेषकर दामोदर एवं बराकर नदियों की घाटी में अवस्थित पहाड़ी श्रृंखलाओं की गुफाओं में उस प्राचीनतम मानव के शैलाश्रयों में अनेक चित्र मिले हैं। इन शैल चित्रों ने पुरात्विदों, मानव–वैज्ञानिकों और कला मर्मज्ञों को अपनी ओर आकर्षित किया है। हजारीबाग जिला मुख्यालय से 45 कि.मी. दूर बड़कागाँव की घाटी में, 'इसको' नामक ग्राम के समीप असवारा पहाड़ी – श्रृंखला की सती पहाड़ी पर, नाग छत्र की आकृति वाली शैल–दीर्घा में सांकेतिक चित्र–लिपि की शैली में अंकित गुफा–चित्रों का प्रकाश में आना एक महत्वपूर्ण खोज है। वह शैल–फलक, जिस पर ये चित्र अंकित किये गए हैं, 500 फुट से भी अधिक लम्बा है। इसके ऊपर ही 100 फुट लम्बा और 26 फुट ऊँचा सावधानी पूर्वक खैरी सतह पर बड़ी मात्रा में चित्र उकेरे गए है। इन चित्रों में आदमी, गाय, हिरण, खरगोश, नदियाँ, सूरज, ईश्वर आदि के चित्र अंकित हैं।

इन चित्रों के अतिरिक्त सांकेतिक चित्र–लिपि भी अंकित है, जिनमें कुछ संदेश अन्तर्निहित है। ये सुघड़ आकृतियाँ रक्तिम लौह–अयस्क (हेमाटाइट) को कूट–पीसकर तैयार किये गये रंग से रंगा हुआ भी है। चित्रों में कहीं–कहीं चूने (अथवा पत्थरों से ही निर्मित सफेद रंग) का भी प्रयोग किया गया है। इस गुफा चित्र दीर्घा की खोज का सारा श्रेय 'इण्डियन नेशनल ट्रस्ट ऑफ कल्चरल हेरिटेज के क्षेत्रिय संयोजक श्री बुलु इमाम को है, जिन्होंने आस्ट्रेलियाई मिशन के पादरी फादर टोनी हर्बर्ट की सूचना के आधार पर इसकी खोज की। श्री इमाम के अनुसार –'इसको' ग्राम में प्राप्त इन गुफा–चित्रों की आकृतियाँ मोहनजोदड़ो (2800 ई० पूर्व से 2500 ई० पूर्व) में प्राप्त शीलों की आकृतियों के समान है।

स्थानीय लोग 'चित्र दीर्घा' को 'कोहवर' और दूसरी गुफा को 'मड़वा दुआर' अथवा 'मड़वा तरी' कहते है। हजारीबाग के अलावा राहम, मण्डेर, सतपहाड़ और देहांगी में जो की उतरी कर्णपुरा घाटी में है शैल चित्र प्रकाश में आए हैं जो 'इसको' में प्राप्त शैल चित्र की ही श्रृंखला के हैं।

हजारीबाग जिले में स्थित इन शैल–चित्रों की तुलना विएना (ऑस्ट्रिया) के सुविख्यात भारतीय रॉक आर्ट विशेषज्ञ इरविन न्यूमायर ने सुन्दरगढ़ (उड़ीसा) के हिमगिरि के विक्रमखोले क्षेत्र के प्रागैतिहासिक शैल–चित्रों से की है। न्युमायर के अनुसार यहाँ दो वर्गो के चित्र है। पहले में जीवन्त चित्रांकन है तथा दूसरे में दुर्बोध ज्यामितिक आकृतियाँ, जिनकी तुलना विन्ध्यांचल के शैल–चित्रों से की जाती है।

झारखण्ड में चित्रकला अथवा लोक चित्रकला की परम्परा गुफा काल के आदि मानव से लेकर इस इक्कीसवीं सदी के वैज्ञानिक मानव अथवा अत्याधुनिक मानव के बीच किसी न किसी रूप में जीवित है। झारखण्ड प्रदेश के चित्रकला को दो भागों में बाँटा गया है:

1. संथाल परगना के चित्र
2. छोटा नागपुर के चित्र

1. संथाल परगना के चित्र मे प्राचीनता, आकार की प्रधानता चित्र के उभार, आदि विशेषताएँ हैं। रंगो में सफेद, नीला, लाल, एवं काला की प्रमुखता रहती है।
2. छोटा नागपुर के चित्र में आधुनिकता, रंग की प्रधानता चित्र समतल होता है, रंगों मे सफेद, नीला, हरा, काला, पीला का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रदेश की प्रमुख चित्रकला शैली 'कोहबर' एवं 'सोहराय' है दोनों ही शैलियाँ भिति चित्रकला (दीवार पर चित्रित होने वाली) है। जिसमें 'कोहबर' चित्रों का निर्माण वैवाहिक अवसर पर वर–वधू के लिए किया जाता है, जबकि सोहराय कृषि चक्र का चित्रण से सम्बन्धित है। इसके अतिरिक्त विविध जनजातीय चित्रकला के लिए संथाल परगना की संथाल जनजाति के लोग काफी जागरूक एवं प्रवीण माने जाते हैं। डॉ. के.सी. टुडू ने यहाँ की विविध लोक चित्रकलाओं का अध्ययन एवं आलेखन का कार्य किया है। उन्होंने संथाली लोक चित्रकला की विशिष्ट शैलियों का वर्णन अपने एक आलेख में किया है:

- भिति चित्रकला
- खोंड़
- चित्रकला
- दाग चित्र
- जादोपटिया चित्र
- गोदना कला इत्यादि।

झारखण्ड के हजारीबाग, गढ़वा, राँची, कोडरमा एवं गिरिडीह आदि कुछ जिलों में भी शैलचित्र प्राप्त हुए हैं। जिसके खोजकर्ता हैं:

हजारीबाग – बुलु इमाम (पद्मश्री सम्मानित)
गढ़वा – डॉ. राकेश तिवारी
राँची – डॉ. बिन्दुला जायसवाल
गिरिडीह – डॉ. ए. के. प्रसाद

'कोहबर' एवं 'सोहराय' चित्रकला की भाँति ही संथाल परगना में जादोपटिया चित्रकला भी काफी प्रचलित थी जो अब लुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी है। जादोपटिया चित्रकला भारत में प्राचीन काल से चली आ रही है। इस चित्रकला को ग्रामीण चित्रकला माना गया है और इसके चित्रकार 'जादो' या 'जादोपटवा' कहलाते हैं, जो हिन्दु की एक विशेष जाति के होते है। इस चित्रकला के विषय वस्तु धार्मिक है जिसमें मृत्यु के देवता यम या यमराज के द्वारा मृत्यु के बाद प्राणियों को उनके कर्मानुसार मिलनेवाले पुरस्कारों या दण्डों की चित्रात्मक सूची या विवरण रहता है। इस चित्रशैली का उद्भव बंगाल से माना जाता है, जिसका प्रचलन आज भी है। यह पट्टचित्र कभी रामायण और महाभारत की कथा को कपड़ा पट्टचित्र के रूप में बनाया जाता था। यह पट्टचित्र लेकर 'जादो' गाँव–गाँव घूमकर किसी संथाल की मृत्यु के अवसर पर विशेष रूप से मृतक के परिवार को दिखाकर तथा सम्बन्धित धर्मगाथा को सुनाकर दान दक्षिणा लेते है। मिल्ड्रेड आर्चर जादोपटिया चित्रशैली की विशेषज्ञ मानी जाती हैं। संथाल परगना में जादोपटिया चित्रकला जैसी प्राचीन एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से युक्त लोक चित्रकला शैली को संरक्षण देने एवं गुणात्मक पोषक देने का कार्य दुमका के युवा चित्रकार मीनू आनन्द और आर० के० नीरद द्वारा प्रदर्शनी लगाने सर्वेक्षण तथा संग्रहण करने का कार्य आदिवासी चित्रकला, अकादमी के बैनर तले 1994 से किया जा रहा है। हजारीबाग के निवासी और 'इन्टैक' संस्था के प्रभारी बुलू इमाम और उनके सहयोगी जस्टीन इमाम ने असवारी पहाड़ी श्रृंखला एवं सती पहाड़ी के विस्तृत क्षेत्र में फैली गुफाओं के शैलचित्रों का गहन सर्वेक्षण किया। श्री इमाम ने हजारीबाग के शैलचित्र कला के साथ–साथ कोहबर, सोहराय तथा अन्य लोक चित्रकलाओं को विषय बनाकर एक पुस्तक की रचना अंग्रेजी में की है जिसका शीर्षक 'रॉक आर्ट ऑफ नार्थ झारखण्ड' है। भारत के अलावे

आस्ट्रेलिया, लन्दन (इंग्लैंड), जर्मनी, जेनेवा आदि नगरों में यहाँ की चित्र प्रदर्शनी के रूप प्रदर्शन कर झारखण्ड के साथ–साथ भारत का भी नाम रौशन किया है। आधुनिक परिदृश्य में झारखण्ड प्रदेश में एक नयी चित्रकला बैद्यनाथ पेंटिंग के रूप में उभर रही है। बैद्यनाथ पेंटिंग का केन्द्र झारखण्ड की सांस्कृतिक राजधानी देवघर है, जहाँ बाबा बैधनाथ का विश्व प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मंदिर है। इस चित्रकला शैली का नामकरण बैद्यनाथ शैली रखने का आधार सृजन स्थल, संदर्भ, विषय और इसके प्रतीकों का सांस्कृतिक शास्त्रीय मूल्य है। बैधनाथ पेंटिंग के विषय बाबा बैद्यनाथ मंदिर, वहाँ की पूजा पद्धति, शास्त्रीय एवं लोक कथाओं एवं मान्यताओं, मंदिर से जुड़े धार्मिक तांत्रिक कर्मकांडो एवं गतिविधियों तथा वहाँ संपन्न होने वाले संस्कारों पर केन्द्रित है। बैद्यनाथ पेंटिंग को विकसित करने में चित्रकार नरेन्द्र पंजियारा लगे हुए है।

निष्कर्ष

अतः झारखण्ड प्रदेश अपनी कलात्मक विशेषता में अन्य राज्यों से कमतर नहीं है। यहाँ प्राचीनकाल के शैलचित्र, जो सिन्धुघाटी सभ्यता से मिलते–जुलते हैं से लेकर कोहबर, सोहराय, जादोपटिया चित्रकला के साथ–साथ आधुनिक विकसित चित्रकला बैद्यनाथ पेंटिंग के रूप में हमारे समक्ष है। सभी कलाओं की अपनी विशेषता है लेकिन चित्रकला मानवीय भावनाओं को प्रकट करने का स्पष्ट माध्यम है, जिसमें निश्छलता सादगी, प्रेम एवं अध्यात्म सभी समाहित होता है।

उत्साह, खुशी, दुःख इन सभी का सम्मिश्रण हमारे झारखण्ड प्रदेश की चित्रकला में स्पष्ट रूप से उजागर होती है, जिसे और परिष्कृत करने का प्रयास जारी है।

संदर्भ सूची

1. बीरोतम, बी., (2001), *झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति,* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना।
2. पागल, अशोक, (2007), *पुरातत्व और इतिहास का झारखण्डी धरोहर,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 63।
3. उपरोक्त – 64
4. उपरोक्त – 65
5. उपरोक्त – 67
6. उपरोक्त – 70
7. उपरोक्त – 71
8. उपरोक्त – 72
9. उपरोक्त – 73
10. उपरोक्त – 75
11. उपरोक्त – 76
12. अनुज, भुवनेश्वर, (2001), *छोटानागपुर के प्राचीन स्मारक,* नागपुरी संस्थान, रांची, पृ० सं० 75।
13. तिवारी, राजकुमार, (2006), *झारखण्ड की रूपरेखा,* शिवांगन प्रकाशन, रांची।
14. सिंह, सुनील कुमार, (2016), *झारखण्ड परिदृश्य,* क्रॉउन पब्लिकेशन।
15. सिन्हा, आदित्य प्रसाद, (2014), *तुलिका झारखण्ड की जनजातीय चित्रकला,* दिल्ली, पृ. सं. – 19।
16. उपरोक्त – 20

****